Page No.
Date :

लेखन कौशल का विकास

भाषा के मौखिक रूप के अंतर्गत भाषा का ध्वन्यात्मक रूप और भावों की मौखिक अभिव्यक्ति सम्मिलित है जब हम इन ध्वनियों को प्रतीकों के रूप में व्यक्त करते हैं और इन्हें लिपिबद्ध करके भाषा को स्थायित्व प्रदान करते हैं, तो भाषा का वह लिखित रूप कहलाता है, भाषा के इन लिखित रूप की शिक्षा प्रतीकों की पहचान कर उन्हें बनाने की क्रिया अथवा ध्वनि को लिपिबद्ध करना लिखना व लिखित भाषा है। कई दृष्टिकोणों से लिखित भाषा भाषाई क्षेत्र में सराहनीय भूमिका अदा करती है भावों एवं विचारों की स्पष्ट एवं सार्थक अभिव्यक्ति का आधार लिखित भाषा भी होती है।

"व्यक्ति जो बोलता है, वह लिखता है और जो लिखता है वही पढ़ता भी है"

यह सूक्ति व्यक्ति के साथ भाषा के संबंध को दर्शाता है लेखन के अंतर्गत शुद्ध, सार्थक व स्पष्ट वर्णों में लिखना सम्मिलित है।

वाचन व पठन-पाठन के साथ दक्षता प्राप्त करने के बाद भी शैक्षिक उद्देश्य पूर्ण नहीं होते, इस कारण शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अन्य प्रकार के शिक्षण की भी आवश्यकता पड़ती है और वह है लेखन

शिक्षण, लिखित अभिव्यक्ति में लिपि को माध्यम बनाया जाता है, जैसे:- अंग्रेजी की लिपि रोमन, हिन्दी की लिपि देवनागरी आदि। मौखिक अभिव्यक्ति में कथन भंगिमा जहाँ इसकी प्रभावशीलता में वृद्धि करता है ठीक वहीं लिखित अभिव्यक्ति में शैली प्रभाव उत्पन्न करने की विशेष भूमिका होती है।

लेखन कौशल की विशेषताएं :—

1. सुस्पष्टता
2. दोषरहित वर्तनी
3. वाक्य रचना
4. विराम चिन्ह
5. क्रमबद्धता
6. व्याकरण की दृष्टि से त्रुटिरहित
7. शब्द चयन
8. वाक्य गठन
9. मौलिकता

लेखन कौशल के उद्देश्य :—

1. तथ्य, विचार व विषयवस्तु की प्रामाणिक अभिव्यक्ति में सहायक।

2. पत्र लेखन क्षमता का विकास (निमंत्रण पत्र, आवेदन पत्र, व्यक्तिगत पत्र एवं व्यावसायिक पत्र आदि)

Page No.
Date :

(3) साहित्य सृजन में सहायक।

(4) समीक्षात्मक विकास में सहायक।

(5) लिखित कौशल का विकास।

(6) ज्ञान, विचार व अनुभवों की लिखित रूप में अभिव्यक्ति क्षमता का विकास।

Scanned with CamScanner